

जगह-जगह बाल व्यक्तित्व विकास समर कैंप के आयोजन

अभिभावक बच्चों की अभिरुचियों को पहचान कर उन्हें मार्गदर्शन करें सकारात्मक विचार एक सुंदर बगीचे के समान



शान्ति सरोवर, (छ.ग.)। अभिभावकों को बच्चों के विकास के लिए शिक्षण के साथ-साथ उनमें निहित अभिरुचियों, प्रतिभाओं को भी पहचानना चाहिए और उनके व्यक्तित्व निर्माण के लिए सही दिशा में प्रेरित करना चाहिए।

उक्त विचार राजीव गांधी शिक्षा मिशन के डायरेक्टर आर.संगीता राव ने शान्ति सरोवर में आयोजित बाल व्यक्तित्व विकास शिविर के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर आय.जी. पुलिस आर.पी.पटेल ने अभिभावकों को कहा की बच्चों को आदर्श व्यक्तित्व निर्माण के लिए प्रेरणाएं अवश्य दें। अपनी पहचान बनाने के लिए सभी प्रयासरत हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए उन्होंने कहा की महत्वाकांक्षी बने, अर्जुन की तरह लक्ष्य

की प्राप्ति के लिए दृढ़ संकल्पित रहें, मकड़ी तरह सतत् प्रयासरत रहें तथा गुरु व शिक्षकों के प्रति श्रद्धावान रहें। कार्यक्रम में अध्यक्षीय उदबोधन देते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की क्षेत्रीय प्रशासिका ब्र.कु.कमला बहन जी ने कहा कि हमें बड़े बुजुर्गों के प्रति असीम आदर का भाव रखना चाहिए जिससे हमें उनकी दुवायें व आशीर्वाद मिलती रहे। जो कि हमारे सफल व्यक्तित्व निर्माण के लिए बहुत ही सहयोगी है।

समारोह में कर्नल एस.एल.बिष्ट ने कहा कि सफल ईसान बनने के लिए जीवन में अनुशासन का होना बहुत जरूरी है। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु.सविता बहन ने किया तथा आभार प्रगट ब्र.कु.किरण बहन ने किया।

अकारात्मकता से खनी रहती है स्थाई खुशी



इंदौर। 'निरंतर एवं स्थाई खुशी' विषय पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.पूजा बहन।

इंदौर। "निरंतर और स्थाई खुशी" विषय पर आयोजित व्याख्यान माला में मुख्य वक्तव्य देते हुए ओम शान्ति भवन की ब्र.कु.पूजा बहन ने कहा कि निरंतर और स्थाई खुशी के लिए आज मनुष्य को सकारात्मक दृष्टिकोण सदा के लिए अपनाना होगा। वर्तमान समय अधिकांश लोगों ने अपनी सोच को व्यर्थ चिंतन करके इतना विकृत कर लिया है कि उसे नकारात्मकता के अलावा कुछ दिखाई ही नहीं देता है।

उन्होंने कहा की सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने के लिए हमें अपने मन में शुद्ध और शुभ विचारों का ही ज्यादा से ज्यादा चिंतन मनन करना होगा। हमें अपनी वाणी अर्थात् मुख से निकलने वाले बोल पर भी अटेंशन रखना होगा। इसकी सरलता से जीवन में धारणा के लिए उन्होंने कहा की ब्रह्माकुमारीज का ईश्वर प्रदत्त सूत्र वाक्य "कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो, सोच के बोलो, अच्छा बोलो, सच्चा बोलो" बहुत ही सहायक होता है। अगर हमने अपने बोल पर नियंत्रण कर लिया तो इससे हमारा विचार और व्यवहार हर एक के प्रति मधुर और श्रेष्ठ होगा। हम दुसरो से खुश रहेंगे तथा दुसरे भी हमसे खुश और संतुष्ट रहेंगे। इसके लिए हमें अपने मन को प्रति दिन शुद्ध और सात्विक विचारों का

पौष्टिक आहार कराना चाहिए। सत् साहित्य प्रार्थना, आध्यात्मिक ज्ञान, ध्यान आदि सशक्त विचारों का अखूत स्रोत है। उन्होंने कहा कि अत्यधिक इच्छायें मनुष्य को अच्छा बनने नहीं देती है। बल्कि इच्छाओं की पूर्ति न होने पर हमारी खुशी गुम हो जाती है। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा की हमारे मन को दुखी करने वाली हमारी अनंत इच्छायें ही है। आज का मनुष्य जिस युग में जी रहा है उसे हम प्रतिस्पर्धा का युग कहे तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी और मानव ने इसी अंधी प्रतिस्पर्धा के पीछे अपनी खुशी को दांव पर लगा दिया है। इसलिए प्रतिस्पर्धा करनी ही है तो हमें अपने आप को दिव्य और श्रेष्ठ अर्थात् उच्च देवताओं के समान बनने में करनी है। इतना ऊंचा जो देवताओं के क्षण भर के दर्शन मात्र से ही खुशी और शान्ति की लहर दौड़ जाती है और मन प्रफुल्लित हो जाता है। हमारी खुशी का आधार है हमारी स्मृति। इसके लिए हमें अपनी स्मृति को श्रेष्ठ बनाना होगा और भूतकाल की व्यर्थ और दुख देने वाली बातों को भुलाकर वर्तमान का आनंद लेना होगा तभी हम निरंतर और स्थाई रूप से खुश रह सकेंगे।

टिक्करापारा (छ.ग.)।

सकारात्मक विचार एक सुंदर बगीचे के समान है जिन्हें सिंचने के लिए मेहनत करना पड़ता है। जबकि नकारात्मक विचार जंगल में उगने वाली घास के समान है जिसमें मेहनत नहीं करनी पड़ती है। सामान्य रूप से हमारी केवल 10 प्रतिशत शक्तियां ही जागृत अवस्था में होती है जिन्हें मेडिटेशन एवं सकारात्मक सोच के द्वारा पूर्णतः विकसित किया जा सकता है।

उक्त विचार ब्र.कु.मंजू बहन ने 'दस दिवसीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि तनाव से बचने के लिए हमें दस सिद्धांतों को अमल में लाना होगा। ये सिद्धांत हैं - सकारात्मक सोच, ये वक्त भी गुजर जायेगा, शुभभावना, निःस्वार्थ प्रेम, जो हुआ सो अच्छा, हर बोज़ ईश्वर को अर्पण करना, कर्म में समर्पणता, सभी को खुशी देने की कोशिश करना, समय का प्रबंधन, आसन-प्राणायाम एवं आत्मा की बैटरी चार्ज करने के लिए नित्य ध्यान का अभ्यास करना। इन दस सिद्धांतों को अपने जीवन में अपना कर हम अपने तनाव को कम कर सकते हैं एवं सदा खुश रह सकते हैं। हमें परिवर्तन करने के लिए समय का इंतजार नहीं करना चाहिए समय से पहले स्वां में परिवर्तन कर लें नहीं तो परमात्मा और समय दो ऐसी शक्ति है जो परिवर्तन कर ही देते हैं।

इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत में ब्र.कु.मंजू बहन ने ईश्वर अपने साथ है गीत के साथ सभी को धान की अनुभूति कराई। तत्पश्चात् कु. गौरी ने मनमोहक स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया। अभिनव, हेली, पीयूष, सौरभ, साहिल एवं प्रतीक ने सभी अभिभावकों के मध्य अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

'दुनिया में हर चीज एक चक्र के रूप में चलती है। जिसमें विभिन्न अवस्थाओं की पुनरावृत्ति होती रहती है। ऋतुओं के चक्र, जल-चक्र, दिन-रात के चक्र, जीवन-चक्र वनस्पति के चक्र को तो हम जानते हैं लेकिन समय के चक्र को स्वयं परमात्मा आकर समझाते हैं कि जैसे दिन के बाद रात, रात के बाद दिन आना ही है उसी प्रकार इन चार युगों - सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग एवं कलियुग के चक्र में



कलयुग के बाद सतयुग आना ही है। वर्तमान समय कलियुग और सतयुग के संगम का समय संगमयुग चल रहा है जिसे कलाकार पुरुषोत्तम संगमयुग कहते हैं। इस संगमयुग में आत्मा का परमात्मा से संगम होता है इस चक्र को सृष्टि चक्र कहते हैं जिसकी पुनरावृत्ति हर 5000 वर्ष के पश्चात् होती रहती है।

माता-पिता का आभार माने

आपने सभी बच्चों को बहुत भाग्यशाली कहा और ऐसे माता-पिता का आभार मानते हुए कहा कि जिन्होंने संस्कारों की शिक्षा के लिए हमें ऐसे कार्यक्रम में भेजा। एकाग्रता

कौरव थे। साथ ही आज सभी ने वज्रासन, हास्यासन, सिंहासन, हाइट बढ़ाने के ताडासन, तिर्यक ताडासन, गुस्सा शांत करने के लिए शस्काशन का अभ्यास किया। पिछले आठ दिनों में सीखे गए टॉपिक-विल पॉवर कैसे बढ़ाये! मन को स्वच्छ और पृथ्वी को हरा-भरा बनायें, सद्भावना के साथ जीवन जीना, समय प्रबंधन, सफलता के सूत्र, स्पीच देने के तरीके, निःस्वार्थ प्रेम, आत्मा, परमात्मा आदि विषयों को सारगर्भित करके दोहराया गया।

प्रतिदिन शिविर की शुरुआत ध्यान एवं मंत्रोच्चारण से की जाती थी प्रारंभ में सभी



बढ़ाने के लिए ध्रुवासन सिखाकर ध्रुव की कहानी सुनाते हुए आपने कहा कि जब ध्रुव को पिता की गोद नहीं मिली तो उन्होंने इसी आसन पर तपस्या की और उन्हें भगवान की गोद मिली। हम भी भगवान से प्रीतबुद्धि है क्योंकि भगवान को पहचानने वाले अर्थात् भगवान से प्रीतबुद्धि केवल पांच पाण्डव ही थे बाकी सभी विपरीत बुद्धि

बच्चे प्राणायाम एवं आंखों के लिए एक्सरसाइज से करते थे। मुख्य अतिथि के रूप में ओम भ्राता सुनील टूटेजा ने सभी बच्चों को आशीर्वाचन दिए एवं भ्राता दौलत विधानीजी एवं रेलवे क्षेत्र के चीफ मटेरियल मैनेजर भ्राता नवीन सिंह जी ने सभी बच्चों को मैडल पहनाया एवं ईश्वरी सौगात दी। रूपा बहन ने सभी को प्रसाद वितरण किया।



तलेरा विहार, मंडसौर। 'स्वास्थ्य जागृति अभियान' के अन्तर्गत शासकीय चिकित्सालय में फल एवं खाद्य सामग्री वितरित करते हुए ब्र.कु.बहनें।